HIN3A16a - Textes classiques **मीरा बाई**

१ - स्तुति-वन्दना राग तिलंग

मण थें परस हरि रे चरण ॥ टेक ॥
सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण ।
इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण ।
इण चरण ध्रुव अटल करस्याँ, सरण असरण सरण ।
इण चरण ब्रह्माण्ड भेट्याँ, नखसिखाँ सिरि भरण ।
इण चरण कालियाँ णाथ्याँ, गोपी लीला करण ।
इण चरण गोबरधन धरयाँ, गरब मधवा हरण ।
दासि मीराँ लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥१॥

राग गूजरी

२ - म्हा मोहणरो रूप लुभाणी ॥टेक॥
सुन्दर बदणा कमल दल लोचण, बाँकाँ चितवण णेणाँ समाणी ।
जमणा किणारे कान्हा धेनु चरावाँ, बंशी बजावाँ मीठ्ठाँ बाणी ।
तण मण धण गिरधर पर वाराँ, चरण कवल बिलमाणी ॥११॥

३ - साँवरा णन्द णंदन, दीठ पड्याँ माई ।
डारयाँ सब लोकलाज सुध बुध बिसराई ।
मोर चन्द्रमा किरीट मुगुट छब सोहाई ।
केसर री तिलक भाल, लोचण सुखदाई ।
कुण्डल झलकाँ कपोल अलकाँ लहराई ।
मीणा तज सरवर ज्यों मकर मिलण धाई ।
नटवर प्रभु भेष धरयाँ रूप जग लोभाई ।
गिरधर प्रभु अंग अंग मीराँ बल जाई ॥१२॥

राग झिंझोटी

४ - म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ ।
दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ ॥टेक॥
भाया छाँड्याँ, बन्धा छाँड्याँ छाँड्याँ सगाँ सूयाँ ।
साधाँ ढिग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ ।
भगत देख्याँ राजी ह्ययाँ, जगत देख्याँ रूयाँ ।
अँसुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ ।
दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ ।
राणा विषरो प्यालो भेज्याँ पीय मगण हूयाँ ।
मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ ॥२८॥

५ – राग पटमंजरी

माई साँवरे रंग राची ॥टेक॥
साज सिंगार बाँध पग घूँघर, लोकलाज तज णाची ।
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ संगत स्याम प्रीत जग साँची ।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची ।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी वाताँ काँची ।
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची ॥१९॥

६ - राग गुनकली

मैं गिरधर के घर जाऊँ ॥टेक॥
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ ।
रैण दिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण विण पल न रहाऊँ ।
जहँ बैठावे तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ ॥२०॥

७ - सखि म्हाँरों सामरिया णै, देखवाँ कराँ री ॥टेक॥
साँवरो उमरण साँवरो सुमरण, साँवरो ध्याण धराँ री ।
ज्याँ ज्याँ चरण धरणां धरणी धर, त्याँ त्याँ निरत कराँ री ।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, कुजाँ मैल फिराँ री ॥२१॥

८ - राग पीलू

साँवरियो रंग राचाँ राणा, साँवरियो रंग राचाँ ॥टेक॥
ताल पखावजां मिरदंग बाजा, साधाँ आगे णाच्याँ ।
बूझ्या माणे मदण बावरी, स्याँम प्रीतम्हां काचाँ ।
विख रो प्यालो राणा भेज्याँ, आरोग्याँ णाँ जाँचाँ ।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम रो साँचाँ ॥३७॥

९ - राणोजी थे जहर दियो म्हे जाणी ॥टेक॥
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी ।
लोकलाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी ।
अपणे घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी ।
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकाणी ।
सब संतन पर तन मन वारों, चरण कँवल लपटाणी ।
मीराँ को प्रभु राखि लई है, दासी अपणी जाणी ॥३८॥

१० - राग सोहानी

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँइ परूँ मैं तेरी चेरी हौ ॥टेक॥
प्रेम भगति को पैड़ो ही न्यारो, हमकूँ गैल बता जा ।
अगर चँदण की चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा ।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा ।
मीराँ कहैं प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥४६॥

११ - राग देस

पिया मोहिं दरसण दीजै हो ।
वेर वेर मैं टेरहूँ, अहे क्रिपा कीजै हो ॥टेक॥
जेठ महीने जल विणा पंछी दुख होई हो ।
मोर आसाढ़ाँ कुलहे, घन चात्रग सोई हो ।
सावण माँ झड़ लागियो, सखि तीजाँ खेलै हो ।
भादवै नदिया बहै, दूरी जिन मेलै हो ।
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजाँ सोई हो ।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो ।
मगसर ठंड बहोती पड़ै, मोहिं वेगि सम्हालो हो ।
पोस मही पाला घणा, अबही तुम न्हालो हो ।
महा महीं बसंत पंचमी, फागा सब गावै हो ।
फागुण फागा खेलहै, वणराइ जरावै हो ।
चैत चित्त माँ ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो ।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो ।
काग उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिंडत, जोसी हो ।
मीराँ विरहिणि व्याकुली, दरसण कब होसी हो ॥११५॥

१२ - म्हाणे चाकर राखाँजी, गिरधारी लाला चाकर राखाँजी ॥टेक॥
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ ।
बिन्द्रावन री कुँज गलिन माँ गोविन्द लीला गास्यूँ ।
चाकरी में, दरसण पास्यूँ, सुमिरण पास्यूँ खरची ।
भाव भगत जागीराँ पास्यूँ, जणम जणम री तरसी ।
मोर मुगुट पीताम्बर सोहाँ, गल वैजन्ती मालो ।
बिन्द्रावण माँ धेण चरावाँ, मोहन मुरली वालो ।
हरे हरे णवाँ कुँज लगास्यूँ, बीचाँ बीचाँ बारी ।
साँवरिया रो दरसण पास्यूँ, पहण कुसुम्बी सारी ।

आधाँ रात प्रभु दरसण दीस्यो, जमणाजी रे तीराँ ।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीरा ॥१५४॥

१३ - राग प्रभाती

जगो बंशीवारे ललना, जागो म्हारे प्यारे ॥टेक॥
रजनी बीती भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे ।
गोपी दही मथत सुनयत है, कँगना के झणकारे ।
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे ।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे ।
माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सरण आया कूँ तारे ॥१६५॥

१४ - राग रागश्री

राम नाम रस पीजै मनुआँ, राम नाम रस पीजै ॥टेक॥
तज कुसंग सतसंग बैठ णित, हरि चरचा सुण लीजै ।
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, बहा चित्त सूँ बहाय दीजै ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजै ॥१९९॥